अनुस्वार की परिभाषा

अनुस्वार का शाब्दिक अर्थ है - अनु + स्वर अर्थात स्वर के बाद आने वाला।

दूसरे शब्दों में - अनुस्वार स्वर के बाद आने वाला व्यञ्जन है। इसकी ध्वनि नाक से निकलती है। हिंदी भाषा की लिपि में अनुस्वार का चिह्न बिंदु (.) के रूप में विभिन्न जगहों पर प्रयोग किया जाता है।

अनुस्वार का प्रयोग

अनुस्वार (ं) का प्रयोग पंचम वर्णों (**ङ, ञ, ण, न, म** ये **पंचाक्षर** कहलाए जाते हैं) के स्थान पर किया जाता है।

जैसे -

गङ्गा = गंगा
चञ्चल = चंचल
डण्डा = डंडा
गन्दा = गंदा
कम्पन = कंपन

अब हम ये तो जान गए हैं कि अनुस्वार (ं) का प्रयोग पंचम वर्णों (ङ, ञ, ण, न, म) के स्थान पर किया जाता है। परन्तु ऊपर दिए गए उदाहरणों में आप देख सकते हैं कि प्रत्येक पंचाक्षर के स्थान पर (ं) अनुस्वार का प्रयोग एक समान है। ऐसे में हमें कैसे पता चले कि कौन सा अनुस्वार (ं) किस पंचाक्षर का उच्चारण कर रहा है? इसके लिए एक नियम को जानना अति आवश्यक है।

अनुस्वार को पंचाक्षर में बदलने का नियम

अनुस्वार के चिह्न के प्रयोग के बाद आने वाला वर्ण जिस वर्ग का होगा अनुस्वार का चिह्न उसी वर्ग के पंचम-वर्ण का स्थान लेगा तथा उसी की उच्चारण ध्वनि निकालेगा।

इस नियम को अच्छे से समझने के लिए आपको हिंदी वर्णमाला के पाँच-वर्गों का ज्ञान होना चाहिए -

'क' वर्ग यानी क, ख, ग, घ, ङ
'च' वर्ग यानी च, छ, ज, झ, ञ

'ट' वर्ग यानी ट, ठ, ड, ढ़, ण
'त' वर्ग यानी त, थ, द, ध, न
'प' वर्ग यानी प, फ, ब, भ, म

अब उदाहरण की सहायता से इस नियम को और अच्छे से समझेंगे -

गंगा = गङ्गा
यहाँ पर अनुस्वार (ं) के चिह्न के प्रयोग के बाद 'क' वर्ग का वर्ण 'ग' है। अतः यहाँ अनुस्वार का चिह्न (ं) 'ङ' यानि 'क' वर्ग के पंचम-वर्ण का उच्चारण कर रहा है।

चंचल = चञ्चल
यहाँ पर अनुस्वार (ं) के चिह्न के प्रयोग के बाद 'च' वर्ग का वर्ण 'च' है। अतः यहाँ अनुस्वार का चिह्न (ं) 'ञ' यानि 'च' वर्ग के पंचम-वर्ण का उच्चारण कर रहा है।

डंडा = डण्डा
यहाँ पर अनुस्वार (ं) के चिह्न के प्रयोग के बाद 'ट' वर्ग का वर्ण 'ड' है। अतः यहाँ अनुस्वार का चिह्न (ं) 'ण' यानि 'ट' वर्ग के पंचम-वर्ण का उच्चारण कर रहा है।

गंदा = गन्दा
यहाँ पर अनुस्वार (ं) के चिह्न के प्रयोग के बाद 'त' वर्ग का वर्ण 'द' है। अतः यहाँ अनुस्वार का चिह्न (ं) 'न' यानि 'त' वर्ग के पंचम-वर्ण का उच्चारण कर रहा है।

कंपन = कम्पन
यहाँ पर अनुस्वार (ं) के चिह्न के प्रयोग के बाद 'प' वर्ग का वर्ण 'प' है। अतः यहाँ अनुस्वार का चिह्न (ं) 'म' यानि 'प' वर्ग के पंचम-वर्ण का उच्चारण कर रहा है।

अनुस्वार के कुछ मुख्य नियम

(1) यदि पंचम अक्षर के बाद किसी अन्य वर्ग का कोई वर्ण आए तो पंचम अक्षर अनुस्वार (ं) के रूप में परिवर्तित नहीं होगा।

जैसे -
वाड्.मय, अन्य, उन्मुख आदि सभी शब्द वांमय, अंय, उंमुख के रुप में नहीं लिखे जा सकते।

(2) पंचम वर्ण यदि द्वित्व रूप में दोबारा आए तो पंचम वर्ण अनुस्वार (ं) के रूप में परिवर्तित नहीं होगा।

जैसे -
प्रसन्न, अन्न, सम्मेलन आदि को प्रसंन, अंन, संमेलन इस तरह नहीं लिखा जाता।

(3) हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि संयुक्त वर्ण दो व्यंजनों से मिलकर बनता है। जैसे - त् + र – त्र, ज् + ञ – ज्ञ बन जाता है इसीलिए अनुस्वार के बाद संयुक्त वर्ण आने पर जिन व्यंजनों से संयुक्त वर्ण बना है, उसका पहला वर्ण जिस वर्ग से जुड़ा है अनुसार उसी वर्ग के पंचम वर्ण के लिए प्रयुक्त होता है।

जैसे -

मंत्र शब्द में

म + अनुस्वार + त्र (त् + र) संयुक्त अक्षर से मिलकर बना है। अनुस्वार के बाद त् आया है और त् वर्ग का पंचम अक्षर है न् इसीलिए अनुस्वार न् के उच्चारण के लिए कार्य कर रहा है।

(4) अनुस्वार के बाद यदि य, र, ल, व, श, ष, स, ह हो तो अनुस्वार (ं) म के रूप में लिखा जाता है।

जैसे -

संरक्षक शब्द में है सम् + रक्षक। यहाँ अनुस्वार के बाद 'र'आया है। व्यंजन संधि के नियमानुसार यहाँ अनुस्वार 'म्'के उच्चारण के लिए कार्य कर रहा है।

अनुनासिक की परिभाषा

जिन स्वरों के उच्चारण में मुख के साथ-साथ नासिका की भी सहायता लेनी पड़ती है। अर्थात् जिन स्वरों का उच्चारण मुख और नासिका दोनों से किया जाता है वे अनुनासिक कहलाते हैं।

इनका चिह्न चन्द्रबिन्दु (ँ) है।

अनुनासिक का प्रयोग

जिस प्रकार अनुनासिक की परिभाषा में बताया गया है कि जिन स्वरों का उच्चारण मुख और नासिका दोनों से किया जाता है, वे अनुनासिक कहलाते हैं और इन्हीं स्वरों को लिखते समय इनके ऊपर अनुनासिक के चिह्न चन्द्रबिन्दु (ँ) का प्रयोग किया जाता है।
यह ध्वनि (अनुनासिक) वास्तव में स्वरों का गुण होती है। अ, आ, उ, ऊ, तथा ऋ स्वर वाले शब्दों में अनुनासिक लगता है।

जैसे -
कुआँ, चाँद, अँधेरा आदि।

अनुनासिक के स्थान पर अनुस्वार (बिंदु) का प्रयोग

अनुनासिक के प्रयोग में आपने देखा कि हमने बताया अनुनासिक स्वरों का गुण होता है और अ, आ, उ, ऊ, तथा ऋ स्वर वाले शब्दों में अनुनासिक लगता है। यहाँ आपके मन में संदेह उत्पन्न हो सकता है कि स्वरों में तो इ, ई, ए, ऐ, ओ और औ भी आते हैं तो अनुनासिक इन स्वरों वाले शब्दों में क्यों प्रयुक्त नहीं होता।

इसका एक कारण है और वह यह है कि जिन स्वरों में शिरोरेखा (शब्द के ऊपर खींची जाने वाली लाइन) के ऊपर मात्रा-चिह्न आते हैं, वहाँ अनुनासिक के लिए जगह की कमी के कारण अनुस्वार (बिंदु) लगाया जाता है।

इस नियम को उदाहरणों के माध्यम से समझेंगे -

नहीँ - नहीं
मैँ - मैं
गोँद - गोंद

इन सभी शब्दों में जैसा कि हम देख रहे हैं कि शिरोरेखा से ऊपर मात्रा-चिह्न लगे हुए हैं - जैसे 'नहीं'में ई, 'मैं'में ऐ तथा 'गोंद'में ओ की मात्रा का चिह्न है।

इन शब्दों पर जब हम अनुनासिक (ँ) का चिह्न लगा रहे हैं, तो पाते हैं कि उसके लिए पर्याप्त स्थान नहीं है, इसीलिए इन सभी मात्राओं (इ, ई, ए, ऐ, ओ और औ) के साथ अनुनासिक (ँ) के स्थान पर अनुस्वार (ं) लगाया गया है।

यहाँ ध्यान रखने योग्य बात यह है कि अनुनासिक (ँ) के स्थान पर अनुस्वार (ं) का प्रयोग करने पर भी इन शब्दों के उच्चारण में किसी प्रकार का अंतर नहीं आता।

अनुस्वार और अनुनासिका में अंतर

1) अनुनासिका स्वर है जबकि अनुस्वार मूलत: व्यंजन। इनके प्रयोग के कारण कुछ शब्दों के अर्थ में अंतर आ जाता है।

जैसे -
हंस (एक जल पक्षी), हँस (हँसने की क्रिया)।
अंगना (सुंदर अंगों वाली स्त्री), अँगना (घर के बाहर खुला बरामदा)
स्वांग (स्व+अंग)(अपने अंग), स्वाँग (ढोंग)

2) अनुनासिका (चंद्रबिंदु) को परिवर्तित नहीं किया जा सकता, जबकि अनुस्वार को वर्ण में बदला जा सकता है।

3) अनुनासिका का प्रयोग केवल उन शब्दों में ही किया जा सकता है, जिनकी मात्राएँ शिरोरेखा से ऊपर न लगी हों।

जैसे अ, आ, उ, ऊ, ऋ
उदाहरण के रूप में - हँस, चाँद, पूँछ

4) शिरोरेखा से ऊपर लगी मात्राओं वाले शब्दों में अनुनासिका के स्थान पर अनुस्वार अर्थात बिंदु का प्रयोग ही होता है। जैसे - गोंद, कोंपल, जबकि अनुस्वार हर तरह की मात्राओं वाले शब्दों पर लगाया जा सकता है।

1. नीचे दिए गए शब्दों में उचित स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग करते हुए शब्दों का मानक रूप लिखिए –
   नालँदा, अँतर, संक्षिप्त, अंबर, चंद्रमा, संघर्ष, नितांत, भाँति, यन्त्र, सँस्कार, अँक, सम्बन्ध, गङ्गा, दीनबन्धु, अन्दर, मन्त्रालय,
   खण्डित, छन्द, हिन्दुस्तान, अँगली, तँगी, तन्त्र, तम्बाकू, पँखुड़ी, कम्पन, दंगल, पँकज, दैत्य, बन्डल, धन्धा, पन्चायत, बँजारा।

2. नीचे दिए गए शब्दों में उचित स्थान पर अनुनासिक का प्रयोग करके शब्दों को पुनः लिखिए-
   बंटवारा, संकरा, आंख, हंसमुख, अंगड़ाई, आंचल, सांस, कहां, ऊंट, आंवला, ऊंघना, आंधी, कांटा, गांव, चांदनी, आंसू, ऊंचाई, छंटनी, जांच, टांग, डांट, पहुंचना।
3. निम्नलिखित शब्दों में से उस शब्द को चुनिए जिनमें अनुस्वार का प्रयोग होता है-
   i. सगति, दाव
   ii. पडित, महगाई
   iii. पजाब, पाव
   iv. सास, सभावना
   v. आच, सुदर
   vi. पाचवा, निमत्रण
   vii. सूघना, ससार
   viii. सभव, धुआ
   ix. सावला, आनद
4. उचित स्थान पर लगे अनुस्वार वाले शब्द छाँटिए

   i. व्यजनं, कंचन, मदिरं
   ii. सयोगं, हसं, संगम

iii. परतुं, प्रंबध, व्यंजन
iv. प्रतिबध, तुंग, मडंली
v. गांव, नोक, नंदन
vi. चंपक, कबंल, गदंगी
vii. सन्यासी, अंधकार, आंतक
viii. गोद, अंत्यत, आनंद

5. उचित स्थान पर अनुनासिक का प्रयोगकर पुनः लिखिए

i. यहा
ii. कुआ
iii. भाषाए
iv. काच
v. साप
vi. हसी
vii. पाच
viii. जाएगे

6. उचित स्थान पर लगे अनुनासिक वाले शब्द छाँटिए

i. काँखा, आँगन, नँदन
ii. मक, प्रसँग, अँधेरा
iii. बजरँग, व्यँजन, हँगामा
iv. अभिनंदन, छंटनी, उमँग
v. पँडित, सुंदर, सूंघना
vi. दाँत, सायँ, जंजीर
vii. चाँदनी, आँख, खुंखार